E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
Impact Factor: RJIF 5.12
IJAAS 2020; 2(1): 272-275
Received: 19-11-2019
Accepted: 23-12-2019

सीता कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिन्दी–विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
सीता कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिन्दी–विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रताप का योगदान

सीता कुमारी

सारांशः
हल्दीघाटी राजस्थान की दो पहाड़ियों के बीच एक ऐसी पतली सी घाटी है, जहाँ की मिट्टी के रंग हल्दी जैसे थे, जिसके कारण उसे हल्दीघाटी कहा जाता है। इतिहास का ये युद्ध हल्दीघाटी के दर्रे से शुरू हुआ था। हल्दीघाटी के युद्ध में महाराणा प्रताप ने अकबर को हरा दिया था। राष्ट्रप्रेमी महाराणा प्रताप अपनी कसम को बचाए रखने के लिए घास रोटी की देश रक्षा हेतु खाते रहे। अपने नन्हे–मुन्हें बच्चों सहित जंगलों में रहते रहे हैं। 21 जून, 1976 में हुए हल्दीघाटी युद्ध। इसमें कुछ मदभेद है। हल्दीघाटी का युद्ध और राणा का योगदान विश्व में अविश्मरणीय है। महाराणा पकी अक्षुण्ण वीरता धर्मनिष्ठा, कर्तव्यपरायणता और देश सेवा ही नहीं, बल्कि चंचल गति चेतक घोड़ा का हवा से बाते करना, चंडिका की जीभ की तरह लपलपाती हुई रूधिर–प्रस्त्रविणी तलवार का बिजली की तरह गिरना, रक्ततपिष तीव्र भाले का ताण्डव, झाला मात्रा और मानसिंह प्रभृति सरदारों का आत्म विसर्जन वीर सिपाहियों का आजादी के लिए खेलते–खेलते–हल्दीघाटी के महायज्ञ में आहुति बनकर स्वाहा हो जाना। महाराणा प्रताप के भुख और प्यास के मारे तड़पते हुए बच्चों का करूण कन्दर और प्रताप के प्राणों के दीपक के उजियाले ये वन–वन पलायिता स्वतन्त्रता की टोह लगाना आज भी आखों के सामने चलता हुआ दृश्य उपस्थित हो उठता है।

प्रस्तावनाः
हल्दीघाटी युद्ध की अलग–अलग दो तारिखें मिलती है, एक 18 जून दूसरा 21 जून 1576। यह युद्ध 4 घंटे चला था। महाराणा प्रताप अपने अश्वारोही दल के साथ हल्दीघाटी पहूँचे युद्ध वहाँ से शुरू हुई और भयंकर रक्तपात खमनौर में हुआ। राणा प्रताप ने इसी तरह की योजना बनाई थी, मगर मुगलों की ओर से लड़ने आए जनरल मानसिंह घाटी के अन्दर नहीं आए। मुगल जानते थे कि घाटी के अन्दर इतनी बड़ी सेना ले जाना सही नहीं रहेगा। कुछ समय सब्र करने के बाद राणा की सेना खमनौर के मैदान में पहुँच गई। इसके बाद जबरदस्त नरसंहार हुआ, कह सकते हैं कि 4 घंटों में 400 साल का इतिहास तय हो गया। राणा प्रताप के पास चेतक समेत कुल 3000 घोड़े थे, रामप्रसाद और सूना समेत 100 हाथी थे। मुगलों के पास इनसे तीन गुना हाथी थे। मुगल सेना के सभी हाथी किसी बख्तर टैंक की तरह सुरक्षित होते थे और इनकी सूंड पर धारधार खांडे बंधे होते थे। मुगल घोड़ों की गिनती युद्ध के समय 10000 से उपर थी।
मेवाड़ की तरफ से तोपों का इस्तेमाल नहीं किया। जबकि मुगल सेना के पास उंट के ऊपर रखी जा सकने वाली तोपें थीं। युद्ध के बीच में एक समय पर राणा प्रताप को मुगलोंने घेर लिया। उनके दूर से मुकुट दिख रहा था, मुकुट को ही निशाना बनाया जा रहा था, ऐसे में सरदार मे सरदार मन्ना जी झाला ने प्रताप का मुकुट पहन लिया, राणा उस समय बुरी तरह घायल थे। मुगल सेना मन्नाजी को
महाराणा प्रताप ने अपने मेवाड़ की रक्षा के लिए अपने पराक्रम का परिचय दिया। और इसका परिणाम यह हुआ कि सम्पूर्ण मेवाड़वासियों नें महाराणा प्रताप का साथ दिया। उद्धृत है ये पंक्तियाँ –

'निज प्रताप–बल से प्रताप ने, अपनी ज्योति जगा दी।
हमने तो जो बुझ न सके, कुछ ऐसी आग लगा दी।।

महाराणा प्रताप ने अपने क्षत्रिाय धर्म का पालन करते हुए मानसिंह को अपमानित किया। इसका परिणाम युद्ध होना निश्चित हो गया। महाराणा प्रताप ने इस युद्ध की ज्वाला में अपनी मातृभूमि की रक्षा कर ऋण चुकाने जैसे कार्य को किया। श्यामनारायण पाण्डेय की ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य है–

''राणा द्वारा मानसिंह का, यह जो मान हरण था।
हल्दीघाटी के होने का, यही मुख्य कारण था।।

हल्दीघाटी के युद्ध में झाला को अपनी मातृभूमि के लिए शहीद होना पड़ा। जब मुगलों की सेना का दबदबा बढ़ गया तब झाला ने अपने सैनिकों को पीछे हट जाने का आदेश देकर खुद को मातृभूमि

के चरणों में समर्पित कर दिया। इसका वर्णन श्यामनारायण पाण्डेय ने अपने महाकाव्य हल्दीघाटी में इस प्रकार किया है–

''जो कुछ बचे सिपाही शेष, हट जाने का दे आदेश।
अपने भी हट गया नरेश, वह मेवाड़–गगन–राकेश।।

हल्दीघाटी के युद्ध में हुई क्षति को महाराणा प्रताप अपने स्मृति में दुहराने लगा, जिसकी भरपाई नहीं की जा सकती थी। इसका बस एकमात्रा उपाय था कि अपनी मातृभूमि को दुश्मनों से मुक्त करना, परन्तु अब जंगल में भोजन और पानी की भी समस्या होने लगी। श्यामनारायण पाण्डेय ने लिखा है–

इस स्मृति से ही राणा के, उर की कलियाँ मुरझाई।
मेवाड़–भूमि को देखा, उसकी आँखे भर आई।।

अब समझा साधु सुधाकर, कर से सहला–सहलाकर।
दुर्दिन में मिटा रहा हैं, उर–ताप सुधा बरसाकर।।

जननी–रक्षा–हित जितने, मेरे रणधीर मरे हैं।
वे ही विस्तृत अम्बर पर, तारों के मिस बिखरे हैं।।
मानव–गौरव–हित मैंने, उन्मत्त लड़ाई छेड़ी।
अब पड़ी हुई है माँ के, पैरों में अरि की बेड़ी।।

पर हाँ, जब तक हाथों में, मेरी तलवार बनी हैं,
सीने में घुस जाने को, भाले की तीव्र अनी हैं।।

जब तक नस में शोणित है, श्वासों का ताना–बाना,
तब तक अरि–दीप बुझाना, है बन–बनकर परवाना।।

घासों की रूखी रोटी, जब तक सोते का पानी।
तब तक जननी हित होगी, कुर्बानी पर कुर्बानी।।''

महाराणा प्रताप के साथ साथ उनके परिजन भी जंगल में कष्ट झेल रहे है। अपनी छोटी बच्ची के मुख से महाराणा प्रताप को उसकी करुणा भरी आवाज इस प्रकार सुननी पड़ती है। श्यामनारायण पाण्डेय ने इसका चित्राण इस प्रकार किया है–

''भूखे–प्यासे–कुम्हलाये, शिशु को गोदी में लेकर।
पूछा, तुम क्यों रोती हो, करुणा को करुणा देकर।।

अपनी तुतली भाषा में, वह सिसक–सिसककर बोली,
जलती थी भूख तृषा की, उसके अन्तर में होली।

हा छही न जाती मुझे, अब आज भूख की ज्वाला।
कल छे ही प्याछ लगी है हो लहा हिदय मतवाला।।

माँ ने छाछों की लोती, मुझको दी थी खाने को।
छोते का पानी देकल, वह बोली भग जाने को।।

अम्मा छे दूल यही पल, छूकी लोती खाती थी।
जो पहले छुना चुकी हूँ, वह देछ–गीत गाती थी।।

छच कहती केवल मैंने, एकाध कवल खाया था।
तब तक बिलाव ले भागा, जो इछी लिए आया था।।

छुनती हूँ तू लाजा है, मैं प्याली छौनी तेली।
क्या दया न तुझको आती, यह दछा देखकल मेली।।

लोती थी तो देता था, खाने को मुझे मिठाई।
अब खाने को लोती तो, आती क्यों तुझे लुलाई।।

वह कौन छत्रा्रु है जिछने, छेना का नाछ किया है ?
तुझको, माँ को, हम छभको, जिछने बनबाछ दिया है।।

पक छोती छी पैनी छी, तलवाल मुझे भी दे दे।
मैं उछको माल भगाऊँ, छन मुझको लन कलने दे।।''

तीन अप्रैल सन् 1576 ई. को सलीम अपने सैनिकों को लेकर मांडलगढ़ पहुँचा। उसके साथ शाही फौज के कुल 5000 गिने–चुने सेनिक थे। सलीम के सहयोगी के रूप में मानसिंह एवं शक्ति सिंह उसकी मदद कर रहे थे। आक्रमण करने का सारा दारोमदार मानसिंह पर था। उसके साथ मुगल सेना के प्रमुख हस्तियाँ मितरख खाँ, ख्वाजा गयासुद्दीन, गाजी खाँ, बादक्शी खाँ, सैयद राजू, कछावा जगन्नाथ, आसफ खाँ, सैयद अहमद और सैयद हासिम बरहा आदि थे।

इधर महाराणा प्रताप को भी गुप्तचरों ने मानसिंह के शाही फौज के मांडलगढ़ पहुँचने की सूचना दी और शक्ति सिंह द्वारा मेवाड़ का सारा भेद बताने की भी बात बताई। महाराणा ने मानसिंह को मांडलगढ़ में ही दबोचने की बात सोची पर उन्होंने सलाहकार रामशाह तोमर के सुझाव पर अपना फैसला बदल दिया। उन्होंने यह रणनीति बनाई कि शत्रुओं की सेना को पहल करने दी जाए। उनपर कुंभलगढ़ की पहाड़ियों से जबावी हमला किया जाए। कुंभलगढ़ में अपनी सेना को चौकस करने के बाद महाराणा प्रताप गोगुंदा पहुँचे और अपने सेना के घेरे को और मजबूत किया। समय के साथ जून में एक लाख मुगल सैनिकों ने कुंभलगढ़ को चारों ओर से घेर लिया। सलीम ने शक्ति सिंह से खुफिया जानकारी के आधार पर मानसिंह से सलाह लेकर यह तय किया कि प्रताप के सैनिकों के रसद के मार्ग को घेर कर बंद कर दिया जाए। कुंभलगढ़ के दुर्ग से जब प्रताप ने मुगल सेना और उसकी घेराबंदी का निरीक्षण किया तो उन्होंने महसूस किया कि राजपूतों की अग्नि–परीक्षा के दिन आ गए। हर तरफ मुगल सैनिकों के तंबू नजर आ रहे थे। मुगल सेना का घेरा इतना मजबूत था कि परिंदा भी कुंभलमेर के क्षेत्रा में प्रवेश नहीं कर सकता था। महाराणा के साथ 22000 सैनिक थे जिनमें ज्यादा संख्या भीलों और नौसीखियों की थी। प्रताप की सेना के पास तीर–कमान, बर्छी, भाले और तलवार जैसे हथियार ही थे जबकि मुगलों के पास तोपें थी और अचूक निशाना लगाने वाले युद्ध–पारंगत तोपची थे। महाराणा प्रताप के पास तोप तो एक भी नहीं था, परन्तु एक–एक सैनिक अपने सिर पर कफन बाँध कर निकला था। जान देने और जान लेने का जुनून प्रताप के हर सैनिक पर सवार था।

मुगल सेना के निरीक्षण के बाद महाराणा प्रताप ने अपने प्रमुख सलाहकारों एवं सरदारों के साथ अपने सैनिकों को सम्बोधित करते हुए कहा ''अब हमारे लिए मातृभूमि पर मिटने या दुश्मनों को मिटाने का अवसर आया है। शत्रुा अपनी संख्या बल से हमें डराना चाहता है, लेकिन हम राजपूत सूर्य के रोशनी की किरण की तरह अंधेरे रूपी दुश्मन का नाश कर देंगे। मुगल सेना का नेतृत्व भावी मुगल सम्राट सलीम कर रहा है और उसका साथ दो गद्दार राजपूत दे रहे हैं। एक गद्दार मानसिंह है जिसने अपनी बहन सलीम को ब्याह दी है और दूसरा गद्दार मेवाड़ का बेटा और मेरा भाई शक्ति सिंह ही है, जिसे भाई कहते हुए भी शर्म आती है। आज यह मेवाड़ का गद्दार बेटा मुगलों के साथ मिलकर अपनी मातृभूमि को ही मुगलों की रखैल बनाने आया है। लेकिन वे यह भूल गये है कि हम मेवाड़ के राजपूत उनपर आकस्मिक बिजली की तरह टूटेंगे। अगर हमारा गद्दार भाई उनको मेवाड़ के चप्पे–चप्पे का भेद न बताया होता तो हमें उन्हें पटकने में कुछ और आसानी होती, परन्तु अब भी हमारी बाजुओं में बल की कमी नहीं हुई है। हमारे एक एक सैनिक को मुगलों के पच्चीस–पच्चीस सैनिकों के सिर काटने हैं। दुश्मनों को यहाँ से बचकर न जाने देंगे, उन्हें यहीं कुंभलमेर की पहाड़ियों में दफना देंगे। हम शिशौदिया वंश के परम पराक्रमी भाई संग्रामसिंह

महावीर 'पत्ता' के परिवार से है, जिन्होंने अपने सोलह वर्ष की अल्पायु में ही चित्तौड़ की रक्षा के लिए हँसते–हँसते प्राणों का बलिदान कर दिया था। इसी प्रकार उन्होंने कई राजपूतों के शौर्यों–बलिदानों की चर्चा कर उपस्थित सभी राजपूतों के रगों में वीर रस का संचार कर दिया। सभी ने अपनी तस्वीरें निकाल कर हुँकार भरते हुए कहा कि अब यह तलवार शत्रुओं का रक्तपान कर ही वापस म्यान में जाएगी।

दोनों ओर से सेना लड़ने के लिए तैयार थी, परन्तु लड़ाई प्रारंभ नहीं हुई। महाराणा प्रताप ने पहले आक्रमण न करने का निर्णय लिया था। जब मुगल सेना आक्रमण करे, तभी वे उसपर टूटेंगे। जबतक मुगल सेना हमला नहीं करती, वे केवल प्रतीक्षा करेंगे। परन्तु मुगल सेना ने आक्रमण न किया। मानसिंह की रणनीति यह थी कि मुगल सेना सीधा हमला कर पहाड़ियों में न फँसे। सिर्फ घेरा डालकर रसद मार्ग को बंद कर दे। फिर जब रसद पहुँचनी बंद हो जाएगी तब प्रताप की सेना किला छोड़कर मैदान में आ जाएगी तब उसे समाप्त करना आसान हो जाएगा। जबकि सलीम इस पक्ष में था कि आगे बढ़कर प्रताप पर हमला किया जाए और यथाशीघ्र युद्ध समाप्त कर लौटा जाए। सलीम को पहाड़ियों में फँसे रहना खतरनाक लग रहा था। परंतु हल्दीघाटी के संकरे मार्ग से सेना के प्रवेश करने एवं प्रताप के सैनिकों तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त करने वाला कोई न था। ऐसे में शक्ति सिंह ने मुगल सेना के हल्दीघाटी में प्रवेश कराने की जबावदेही ली और शक्ति सिंह के नेतृत्व में मुगल सेना हल्दीघाटी के मार्ग से प्रताप के ठिकाने की ओर बढ़ने लगी। जब प्रताप ने यह देखा तो उन्हें यह समझते देर न लगी कि शक्ति सिंह ने ही मुगलों को प्रवेश कराया है क्योंकि शक्ति सिंह को कुंभलगढ़ तक पहुँचने का मार्ग और चप्पा–चप्पा देखा हुआ था।

18 जून 1576 को महाराणा प्रताप ने मुगल सेना को हल्दीघाटी में ही दबोचने का निश्चय किया। प्रताप का आदेश पाते ही राजपूत नंगी तलवारें लेकर मुगल सेना पर टूट पड़े। भीलों का समूह जहर–बुझे बाणों से मुगल सैनिकों के प्राण हरने लगे। प्रताप के इस अप्रत्याशित हमले से मुगल सैनिकों की लाशें बिछने लगी। मुगल सेना में मानसिंह सेना के बीचो–बीच था। सैयद बरहा दाहिनी ओर, बांयी ओर गाजी खाँ बादक्शी था, जगन्नाथ कछावा तथा गयासुद्दीन आसफ खाँ इरावल में थे। आगे के भाग में 'चूना–ए–हरावल' के नाम से विख्यात मुगल सैनिक थे, जो कुशल लड़ाकू माने जाते थे।

महाराणा प्रताप की सेना में बीच में स्वयं प्रताप थे। दाहिनी ओर रामाशाह तोमर तथा बीदा झाला, बांयी ओर रामदास राठौर था। राणा प्रताप ने मुगल सेना पर अपनी सारी सैन्य शक्ति एक साथ झोंक दी थी। रिजर्व के रूप में सिर्फ पूँजा भील था जो अपने साथियों के साथ पहाड़ों में छिपा रहा। शहजादा सलीम हाथी पर सवार था, जब उसने मुगल सैनिकों को गाजर–मूली की तरह कटते और मुगल सेना का पाँव उखरते देखा तो तोप चलाने का हुक्म दिया।

तोपों के चलते ही लड़ाई का रूख बदल गया। प्रताप के सैनिकों के पास तोप का कोई जबाव नहीं था। तोप के सामने उनकी तलवार, बर्छी, भाले आदि का कोई काम नहीं था। राजपूतों की लाशे बिछने लगी। यह देखकर प्रताप ने अपनी सेना की एक टुकड़ी को मुगलों से तोप छिनने का आदेश दिया। आदेश मिलते ही राजपूत टुकड़ी तोप छिनने लपकी। परन्तु तोप के गोलों के आगे वे कुछ नहीं कर सके। उनका शरीर क्षत्–विक्षत होकर गिरने लगा। यह विवशता देखकर प्रताप को बहुत दुःख हुआ। परन्तु तोप के गोलों की परवाह न कर प्रताप के सैनिक दुगुने उत्साह से दुश्मनों पर टूट पड़े। स्वयं प्रताप भी घाटी से निकल कर गाजी खां की सेना पर टूट पड़े, जो बहुत देर से घाटी के द्वार पर कहर ढ़ा रहा था। महाराणा प्रताप ने गाजी खाँ की सेना के परखच्चे उड़ा दिए। इस प्रकार मुगल सेना और राणा प्रताप की सेना के बीच घमासान युद्ध हुआ, परन्तु हार–जीत का कोई फैसला न हो पाया। दोनों ओर से सैनिकों की लाशें बिछ गई थी। पूरा युद्ध क्षेत्रा लाशों से पट गया था। मुगल सेना की तोपों से निकले गोलों ने राजपूत सेना पर कहर ढाया था। भीलों के विष–युक्त बाणों ने और राजपूतों के बर्छे ने मुगल सैनिकों के छक्के छुड़ा दिये थे। इसको श्री श्याम नारायण पाण्डेय ने 'हल्दी घाटी' में यूँ लिखा है–

''निर्बल बकरों से बाघ लड़े, भिड़ गये सिंह मृग–छौने से।
घोड़े गिर पड़े गिरे हाथी, पैदल बिछ गये बिछौनों से।।

हल्दीघाटी में श्री श्यामनारायण पाण्डेय लिखते है कि कुछ वीर राजपूत सैनिकों ने तोप पर पहुँच कर तोप का मुँह मुगलों की ओर कर दिया और राजपूत दुगुने जोश से मुगलों पर टूट पड़े।

21 जून 1576 ई. के इस युद्ध में महाराणा प्रताप अकेले एक फौज की तरह लड़ रहे थे। संख्या में चार गुणी होने पर भी मुगल सेना प्रताप की सेना के सामने टिक नहीं पा रही थी। युद्ध के दौरान ऐसे कई मौके आए जब मुगल सेना पीछे भागने लगी। उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे वे आदमी के साथ नहीं, बल्कि जिन्नों के साथ लड़ रहे हों। महाराणा प्रताप युद्ध के पहले दिन से ही मानसिह को ढूँढ़ रहे थे। वे मानसिंह के साथ दो–दो हाथ कर अपना शौर्य दिखाने के लिए बेचैन थे, परन्तु मानसिंह अपनी सेना के झुंड में छिपा रहा। आज प्रताप ने मानसिंह तक पहुँचने का निर्णय कर लिया। दोनों हाथों सें तलवार चलाते हुए मुगल सैनिकों को गाजर–मूली की तरह काटते हुए वे सेना के बीच में पहुँचे। वे साक्षात् शिव के अवतार से लग रहे थे। उन्होंने मुगल सेना की लाशों की ढ़ेर लगा दी। उनके साथ कुछ गिने–चुने सहायक ही थे। वे जिधर निकल जाते उधर हाहाकार मच जाता। कुछ समय पश्चात् वे अकेले ही बच गये, उनके साथ दो–तीन अंगरक्षक थे जो साये के समान लगे रहे। मानसिंह को ढूँढ़ते हुए उनकी नजर शहजादा सलीम पर पड़ी जो अपने हाथी पर एक बड़े लोहे के पिंजड़े में सुरक्षित बैठकर युद्ध का संचालन कर रहा था। प्रताप को देखते ही सलीम ने महावत को हाथी घुमाने का आदेश दिया। महाराणा ने ऐसा भाला फेंका कि यदि वह हौदे से नहीं टकराता तो सलीम का तुरंत काम तमाम हो जाता। उसी समय सलीम के पास सुरक्षा कवच बने विशेष सैनिकों ने प्रताप पर आक्रमण कर दिया। परन्तु महाकाल के समान प्रताप ने दोनों हाथों से तलवार चलाते हुए अनेक सैनिकों को मौत के नींद सुला दिया।

निष्कर्षः

महाराणा प्रताप को पकड़ने की लालसा अकबर के मन में ही रह गई। वह जीवनपर्यंत महाराणा प्रताप को पकड़ने के लिए लालायित रहा। हल्दीघाटी के प्रसिद्ध युद्ध के बाद अकबर ने अपनी पूरी ताकत, कुटनीतिक प्रयास सब लगा लिया, लेकिन सिर्फ महाराणा प्रताप को परेशान करने के सिवा कुछ नहीं कर सका। अकबर के प्रयासों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे विरह–वेदना में पागल कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका के दीदार को तरस रहा हो ! किन्तु पर्दानशी उसकी प्रेमिका उससे हमेशा आटे में ही रही।

अनेक संघर्षों एवं युद्धों के बाद बार–बार अपने राज्य को गँवाने के बाद भी अंततः मांडलगढ़ और चित्तौड़गढ़ को छोड़कर पूरे मेवाड़ को अपने कब्जे में ले लिया। प्रताप ने अपनी नई राजधानी उदयपुर से 57 मील दूर स्थित चावंड में स्थापित कर ली।

इधर अकबर के बार–बार प्रताप पर हमले से राजपूत राजाओं में असंतोष व्याप्त हो रहा था, इस बात को अकबर समझ गया। उसने उस समय दो घोषणाएँ की। एक अपने बेटे सलीम की शादी मानसिंह की बहन से तय किया और दूसरा यह घोषणा किया कि महाराणा प्रताप पर और हमले नहीं किया जाएगा। इसका राजपूत राजाओं ने स्वागत किया। सलीम की शादी में सभी राजपूत राजाओं को आमंत्रित कर सम्मानित किया। वे अपनी सभी असंतोष को भूल गये।

संदर्भ–सूचीः

1. 'हल्दीघाटी'– श्याम नारायण पाण्डेय, इंडियन प्रेस (पब्लिकेशंस), प्रा.लि., इलाहाबाद, प्रकाशन वर्ष–2016, पृ. 9
2. 'महाराणा प्रताप'–एम.पी. कमल, राजा पॉकेट बुक्स, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष–2016, पृ. 31
3. 'महाकवि श्याम नारायण पाण्डेय'–डॉ. विजयानंद, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–2016, पृ. 37
4. 'हल्दीघाटी'– श्याम नारायण पाण्डेय, इंडियन प्रेस (पब्लिकेशंस), प्रा.लि., इलाहाबाद, प्रकाशन वर्ष–2011, पृ. 46–47
5. 'महाराणा प्रताप'–विनोद तिवारी, मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली, ग्यारहवां संस्करण–2015, पृ. 45
6. 'हल्दीघाटी'– श्याम नारायण पाण्डेय, इंडियन प्रेस (पब्लिकेशंस), प्रा.लि., इलाहाबाद, प्रकाशन वर्ष–2011, पृ. 133
7. 'महाराणा प्रताप'–एम. पी. कमल, राजा पॉकेट बुक्स, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष–2016, पृ. 56
8. उपरीवत्, पृ. 64
9. 'कुँअर सिंह और 1857 की क्रांति'–डॉ. सुभाष शर्मा, अनंत कुमार सिंह, जवाहर पाण्डेय, एन.बी.टी. इण्डिया, नई दिल्ली, चौथी आवृत्ति, 2014, पृ. 2
10. उपरीवत, पृ. 10
11. उपरीवत, पृ. 11
12. उपरीवत, पृ. 13
13. 'हिस्ट्री ऑफ दी इंडियन म्यूटिनी'–जी.डब्ल्यू.फॉरेस्ट, एशियन एजुकेशनल सर्विसेज–खण्ड–1, पृ. 401–402
14. विकिपिडिया–ीजजचेरूध्ध्मदण्उण्पापचमकपंण्वतह
15. '1857 का स्वातंत्रय समर'–वी.डी. सावरकर, प्रभात प्रकाशन, पृ. 270
16. 'टू नेटिव नैरिटिव्स ऑफ द म्यूटिनी इन देलही'–सी.टी. मेटकॉफ, आर्यन बुक्स इंटरनेशनल, पृ. 226
17. '1857 का स्वातंत्रय समर'–वी.डी. सावरकर, प्रभात प्रकाशन, पृ. 261
18. 'कुँअर सिंह और 1857 की क्रांति'–डॉ. सुभाष शर्मा, अनंत कुमार सिंह और जवाहर पाण्डेय, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (छठज्ए प्दकपं), चौथी आवृत्ति–2014, पृ. 37
19. 'इंडियन म्यूटिनी ऑफ 1857'–जी.वी. मैलसन, खण्ड–4, रूपा एण्ड को0,
    पृ. 321
20. '1857 का स्वातंत्रय समर'–वी.डी. सावरकर, प्रभात प्रकाशन, पृ. 336
21. 'इंडियन म्यूटिनी ऑफ 1857'–जी.वी. मैलसन, खण्ड–4, रूपा एण्ड को0,
    पृ. 330
22. '1857 का स्वातंत्रय समर'–वी.डी. सावरकर, प्रभात प्रकाशन, पृ. 341
23. उपरीवत, पृ. 343–344